राजस्थान–सरकार

निदेशालय आयुर्वेद विभाग राजस्थान अजमेर

क्रमांक/प.3/सामा.–6/माननीय मंत्री महो./2017/ 13312 दिनांक: 10-7-17

–:परिपत्र:–

माननीय मंत्री महोदय, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाए (इं.एस.आई.), चिकित्सा शिक्षा, आयुर्वेद एवं भारतीय चिकित्सा पद्धति विभाग राजस्थान जयपुर के निर्देशानुसार प्रत्येक संस्कृति के महापुरुषों ने अपने जीवन के अनुभवों से ऐसे उपदेशात्मक संदेश दिये है, जिनसे व्यक्ति को सही दिशा प्राप्त हो सके। ऐसा कई बार सुनने में आया है कि कही लिखे हुऐ एक वाक्य को पढकर व्यक्ति का जीवन ही बदल गया है।

राज्य के समस्त निजी एवं राजकीय मेडिकल विश्वविद्यालय, समस्त मेडिकल कॉलेज, जिला चिकित्सालय, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, आयुर्वेद औषधालय, होम्यौपेथी एवं यूनानी चिकित्सालय में प्रतिदिन हजारों लोग स्वास्थ्य लाभ एवं अपने रुग्ण परिजनों से मिलने आते है। इन सद्वाक्यों के पढने से आगन्तुकों एवं कार्यरत कार्मिको को भी सही दिशा प्राप्त करने में सहयोग मिलता है अथवा रुग्ण व्यक्ति का मनोबल बढता है तो यह एक उपलब्धि होगी।

अतः बोलती दीवार अभियान अन्तर्गत "प्रेरणास्पद वाक्य" का संकलन सलग्न कर निर्देशित किया जाता है कि विभागीय औषधालयों/चिकित्सालयों/कार्यालयों के परिसर में यथा स्थान संलग्न सद्वाक्यों, प्रेरणादायी युक्तियों तथा श्लोकों का लेखन करवाने का श्रम करावें। सरकार की और से किया गया यह सार्थक कदम चिकित्सालय में सकारात्मकता का वातावरण निर्माण करने में सहायक होगा।

(स्नेहलता पंवार)
निदेशक

निदेशालय यूनानी चिकित्सा विभाग राजस्थान जयपुर

आयुष भवन, सेक्टर 26, प्रताप नगर, जयपुर–302033 फोन नं. 0141– 2796625 मेल–Rajunani444@yahoo.in

क्रमांक: प.1/सामा./मा.मंत्री महो./2017/ 3140 दिनांक:– 14.09.2017

प्रतिलिपि :– निम्नांकित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु –

1. संयुक्त शासन सचिव, आयुर्वेद एवं भारतीय चिकित्सा विभाग, राजस्थान, जयपुर।
2. निदेशक आयुर्वेद विभाग, राजस्थान अजमेर।
3. समस्त यूनानी चिकित्साधिकारी राजकीय यूनानी चिकित्सालय/औषधालय/सीएचसी/पीएचसी/जिला चिकित्सालय को बोलती दीवार अभियान अन्तर्गत "प्रेरणास्पद वाक्य" का संकलन संलग्न सद्वाक्यों, प्रेरणादायी युक्तियों तथा श्लोको का लेखन आवश्यक रूप से करवाने का श्रम करावें।
4. लेखाशाखा/रक्षित पत्रावली।

लईक अहमद

(डॉ. लईक अहमद खां)
निदेशक

बोलती दीवार अभियान

प्रेरणाप्रद

वाक्य

* मानव मात्र एक समान, एक पिता की सब संतान।
* जिसने बेच दिया ईमान, करो नहीं उसका गुणगान।
* अनाचार बढ़ता है कब, सदाचार चुप रहता जब।
* अधिकारों का वह हकदार, जिसको कर्त्तव्यों से प्यार।
* करते वही राष्ट्र उत्थान, जिनको हैं चरित्र का ध्यान।
* बहुत सरल उपदेश सुनाना, किन्तु कठिन करके दिखलाना।
* अपना–अपना करो सुधार, तभी मिटेगा भ्रष्टाचार।
* हम बदलेगें युग बदलेगा, हम सुधरेंगे युग सुधरेगा।
* यही सिद्धि का सच्चा मर्म, भाग्यवाद तज करो सुकर्म।
* करो नहीं ऐसा व्यवहार, जो न स्वयं को हो स्वीकार।
* जति–पाँति का घातक रोग, करता विफल एकता–योग।
* धुत्त नशे में जो रहता है, संकट खड़े रोज करता है।
* पिटती पत्नी बिकते जेवर, छोड़ शराबी ऐसे तेवर।
* यदि सुख से चाहो तुम जीना, कभी भूलकर मद्य न पीना।
* नशे को दूर भगाना है, खुशहाली को लाना है।
* नशा बड़ा ही है शैतान, हमें बना देता हैवान।
* मदिरा पीने में क्या शान, गली–गली होता अपमान।
* सोचो समझो बचो नशे से, जीवन जियो बड़े मजे से।
* नशा नाश की जड़ है भाई, इससे दूर रहा हे भाई।
* नारी का असली श्रृंगार, सादा जीवन उच्च विचार।
* अगर रोकनी है बर्बादी, बंद करो खर्चीली शादी।
* नारी का सम्मान जहाँ है, संस्कृति का उत्थान वहाँ है।
* जो कुछ बच्चों को सिखलाते, उसे स्वयं कितना अपनाते ?
* वन रोपें, उद्यान लगाएँ, हरा–भरा निज देश बनाएँ।
* मानवता की यही पुकार, रोको नारी अत्याचार।
* ईश्वर के घर लगती देर, किन्तु नहीं होता अन्धेर।
* वही दिखाते सच्ची राह, जिन्हें न पद–पैसे की चाह।
* सही धर्म का सच्चा नारा, प्रेम एकता भाई–चारा।
* मानवता के दो आधार, सादा जीवन उच्च विचार।
* सुधरे व्यक्ति और परिवार, होगा तभी समाज सुधार।
* छोटी–छोटी भूलों पर ध्यान दें और अपना सुधार करें।
* आलसी लोगों के पास से सफलता दूर–दूर ही रहती है।

* आज का काम कल पर मत टालिए।
* अदालत और पुलिस से बच सकते हैं, परमेश्वर से नहीं।
* अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।
* असत्य सदा हारता है।
* बच्चा माता–पिता के व्यक्तित्व और स्वभाव का संगम है।
* अपने कर्त्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करने से बड़ा कोई धर्म नहीं है।
* शालीनता बिना मोल मिलती है, पर उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है।
* जो बच्चों को सिखाते हैं, उन पर बड़े खुद अमल करें, तो यह संसार स्वर्ग बन जाएं।
* स्वार्थ, अहंकार और लापरवाही की मात्रा का बढ़ जाना ही व्यक्ति के पतन का कारण होता है।
* हम क्या करते हैं, इसका महत्व कम है, किन्तु उसे हम किस भाव से करते हैं, इसका अधिक महत्व है।
* ईश्वर सभी को श्रेष्ठ उत्तरदायित्व सौंपता है, पर प्रसन्न उन्हीं पर होता है, जो उन्हें निभाते है।
* उत्तम ज्ञान और सद्विचार कभी नष्ट नहीं होते।
* मनुष्यता सबसे अधिक मूल्यवान् है। उसकी रक्षा करना प्रत्येक जागरूक व्यक्ति का परम कर्त्तव्य है।
* ईमान और भगवान ही मनुष्य के सच्चे मित्र हैं।
* लोग प्रशंसा करते हैं या निन्दा इसकी चिन्ता छोड़ों। सिर्फ एक बात सोचो कि ईमानदारी से जिम्मेदारियाँ पूरी की गई या नहीं।
* शालीनता बिना मोल मिलती है, पर उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है।
* जिन्हें लम्बी जिन्दगी जीनी हो, वे बिना कड़ी भूख लगे कुछ भी खाने की आदत न डालें।
* अपने को मनुष्य बनाने का प्रयत्न करो, यदि उसमें सफल हो गये, तो हर काम में सफलता मिलेगी।
* श्रेष्ठता का मार्ग वह हैं, जिस पर खुद चलकर ही किसी को चलने की प्रेरणा दी सकती है।
* ज्ञान मनुष्य को सत्य का दर्शन कराता हैं।
* ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य चरित्र निर्माण है।
* विद्या के बिना मनुष्य पशु के समान है।
* शिक्षा के बिना मनुष्य नेत्र रहते हुए भी अन्धा है।
* निरक्षरता मनुष्य जीवन का बहुत बड़ा कलंक है।

* ज्ञान प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहें।
* ज्ञानदान से बढ़कर और कोई दान नहीं है।
* उत्तम ज्ञान और सद्विचार कभी नष्ट नहीं होता।
* ज्ञान व्यक्ति को शीलवान, शिष्ट और विनम्र बनाता है।
* अधिकारों से अधिक अपने कर्त्तव्यों का ध्यान रखें।
* अनीति न करें, न कराएँ और न उसका समर्थन करें।
* प्रगति का उक सुनिश्चित लक्ष्य है–आत्म निर्माण।
* भाग्य पर नहीं, चरित्र पर निर्भर रहों।
* आज का काम कल पर मत टालिए।
* हमारा हर क्षण सार्थक, श्रेष्ठ एवं उपयोगी कार्यो में लगे।
* शिष्टाचार हमारी सभ्यता और संस्कृति का वर्णन है।
* झूठ एक न एक दिन प्रकट होकर है।
* जो असंभव कार्य को संभव करके दिखाए उसे ही "प्रतिभा" कहते है।
* जो विद्यार्थी ज्ञान संवर्धन के प्रति आस्थावान है, वही सच्चा है।
* गलत तरीके से पास होना, अपनी आत्मा के सामने झूठा बनना है।
* जो वर्तमान की उपेक्षा करता है, वह अपना सर्वस्व खो देता है।
* अपने व्यक्तिता को श्रेष्ठ विचारों का स्नान करा देना ही ध्यान है।
* विद्या मनुष्य की मलीनताओं को मिटाकर उसे उज्जवल बनाती है।
* विद्याध्ययन एक तप है, जिसके तेज से तपकर विद्यार्थी कुन्दन बनता है।
* संसार में विद्या से बढ़कर कोई मित्र नहीं है और अविद्या से बढ़कर कोई शत्रु नहीं।
* विद्या हमारी समृद्धि में आभूषण, विपत्ति में शरण स्थान और समस्त कालों में आनन्द का साधन होती है।
* जिस प्रकार शिक्षा के बिना विद्या क्रियाशील नहीं हो सकती, उसी प्रकार विद्या के बिना शिक्षा बेजान होती है।
* अनजान होना उतनी लज्जा की बात नहीं, जितनी सीखने के लिए तैयार न होना।
* वर्तमान युग की सबसे बड़ी शक्ति शस्त्र नहीं, वरन् सद्विचार है।
* ज्ञान कहीं से, किसी से अथवा किसी भी मूल्य पर मिले, ले लेना अच्छा है।
* अध्ययन और मनन किये बिना कोई मनुष्य नहीं बन सकता।
* दूसरों के साथ वह व्यवहार न करों, जो तुम्हें अपने लिए पसन्द नहीं।
* जिसने शिष्टता और नम्रता नहीं सीखी, उनका बहुत कुछ सीखना भी व्यर्थ रहा।
* असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं किया गया।

* व्यसनों के प्रति विरोध का नाम ही सद्गुण नहीं हैं, अपितु व्यसनों की ओर प्रवृति न जाना ही सद्गुण है।
* आज का दिन हमारा है। गुजरा हुआ कल मर गया और आगे वाला कल अभी पैदा नहीं हुआ।
* जिसे नैतिकता के प्रति आस्था तो हो, पर उसके लिए लड़ पड़ने की हिम्मत न हो, वह भले ही कई डिग्रियां ले चुका हो, सुशिक्षित नहीं कहा जा सकता।
* ज्ञान पारस की तुलना में महान् हैं। पारस लोहे को सोना भर बनाता है, पर ज्ञान के स्पर्श से मनुष्य महानतम बन जाता है, पर होता तभी है जब उसके सदुपयोग की व्यवस्था बनी रहे।
* शरीर को रोगी को और दुर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है–लोकमान्य तिलक
* सद्ज्ञान से भरी हुई पुस्तकें देवताओं के समान हैं, जो दिव्य विचारों से हर व्यक्ति को लाभान्वित करती है।
* उत्तम पुस्तकें जाग्रत् देवता है। अध्ययन, मनन, चिन्तन द्वारा उनकी पूजा करने पर तत्काल वरदान पाया जा सकता है।
* स्वाध्याय–महापुरूष बनने की अनुपम विद्या है।
* पुस्तकालय हमारा गुरू है, जो अज्ञान के अन्धकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश देता है।
* अच्छी पुस्तकें मन के लिए साबुन का काम करती है – महात्मा गांधी
* पुस्तकालय एक ऐसी दिव्य संस्था हैं, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी ज्ञानशक्ति और क्षमताओं का विकास कर सकता है। – रोम्यों रोला
* बुरी पुस्तकें को पढ़ना जहर पीने के समान है। – टालस्टाय
* पालने से लेकर कब्र तक ज्ञान प्राप्त करो। – कुरान
* लगन से ज्ञान मिलता है। लगन के अभाव में ज्ञान खो जाता है। – गौतम बुद्ध
* विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही शस्त्र है। – बर्नार्ड शॉ
* जिसे पुस्तकें पढ़ने का शौक है, वह सब जगह सुखी रह सकता है। –महात्मा गांधी
* अपैतु सर्व मत् पापम्।
  अर्थात्–सब प्रकार के दुष्कर्मों से बचों। (अथर्ववेद 10/1/10)
* ईशानः वघं यदय।
  अर्थात्–मनुष्य अपनी परिस्थितियों का निर्माता आप है। (ऋग्वेद)
* मा प्रगाम पथो वयम्।
  अर्थात्–हम सुपथ से कुपथ की ओर न जाँए। (ऋग्वेद 10/57/1)
* ऊर्ध्वो भव।
  अर्थात्–ऊँचे उठों अर्थात् कर्तव्य के लिए खड़े हो जाओं। (यजुर्वेद 13/13)

* आदेवानामपि पन्थामगन्म।
अर्थात्–उस मार्ग पर चलो जिस मार्ग पर सज्जन चलते है। (अथर्ववेद 19/59/3)
* उच्च तिष्ठ गहते सौभागाय।
अर्थात्–श्रेष्ठ बनना ही महान् सौभाग्य है। (अथर्ववेद 2/6/2)
* रूहो रूरोह रोहितः।
अर्थात्–उन्नति उसकी होती है, जो प्रत्यनशील है। (अथर्ववेद 13/3/26)
* अपैतु सर्व मत् पापम्।
अर्थात्– सब प्रकार के दुष्कर्मों से बचो। (अथर्ववेद 10/1/10)
* वयं राष्ट्रे जागृयाम।
अर्थात्– हम राष्ट्र के लिए सदा जाग्रत रहें। (यजुर्वेद 9/23)
* जानना अच्छा हैं, किन्तु जीवन में उतारना और भी अच्छा है। – श्रीमाँ
* अपने लक्ष्य को कभी मत भूलो कभी अभीप्सा करना बन्द मत करों। – महर्षि अरविन्द
* असंभव एक शब्द है, जो केवल भूखों के शब्दकोष में पाया जाता है। – नेपोलियन
* जैसा तुम्हारा लक्ष्य होगा, वैसा ही तुम्हारा जीवन भी होगा। – श्रीमाँ
* महान् उद्देश्य की प्राप्ति के प्रयत्न में ही वास्तविक प्रसन्नता निहित है। – पं. जवाहर लाल नेहरू
* सफलता अपने हाथों में नही, बल्कि मेहनत अपने हाथों में है। – अब्राहम लिंकन
* अपने किये का हिसाब सबको देना होता है। – कुरान शरीफ
* जैसा बोओगे–वैसा काटोगे। – ईसा मसीह
* लगन से ज्ञान मिलता है और लगन के अभाव से ज्ञान खो जाता है। – गौतम बुद्ध
* ऐसा कोई गुप्त काम न करों कि उसे दूसरों से छिपाने की जरूरत पड़े – पं. जवाहर लाल नेहरू
* प्रतिभा के माने है बुद्धि में नई–नई कोंपले फूटते रहना। नई कल्पना, नया उत्साह, नई खोज, नई स्फूर्ति–ये सब प्रतिभा के लक्षण है। – आचार्य विनाबा भावे
* संयम मनुष्य को देवतुल्य बना देता है। – भगवान महावीर
* जो कुछ काम करो पूरे उद्योग और उत्साह से करो। उद्योग, उत्साह और धीरज में बड़ी भरी शक्ति है। – मदनमोहन मालवीय